मैंग्रोव

//

मैंग्रोव

* उष्णकटिबंधीय/उपोष्णकटिबंधीय तटीय अंतर्ज्वारीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले लवण-सहिष्णु पादपों के विविध समूह

विशेषताएँ

- ये **प्रतिकूल स्थितियों** (उच्चलवण,निम्नऑक्सीजन) में जीवित रहते हैं
- इनकी जड़ें (Pneumatophores- न्यूमेटोफोर/वायवीय जड़ें) वायुमंडल से ऑक्सीजन अवशोषित करती हैं
- ताजे जल को संग्रहीत करने के लिये मोटी **अवशोषक पत्तियाँ** (succulent leaves)

मैंग्रोव आवरण

- **वैश्विक:** एशिया> अफ्रीका> उत्तरी और मध्य अमेरिका > दक्षिण अमेरिका
- **भारत** (ISFR 2021): पश्चिम बंगाल > गुजरात> अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह > आंध्रप्रदेश > महाराष्ट्र

सुंदरबन- मैंग्रोव वनों का विश्व का सबसे बड़ा एकल खंड

महत्त्व

- **समुद्र तट को संयत** करते हैं तथा मृदा अपरदन को कम करते हैं
- **चक्रवातों** से सुरक्षा
- पोषक तत्त्वों को अवशोषित करके जल की गुणवत्ता में सुधार करते हैं
- महत्त्वपूर्ण **कार्बन सिंक**

खतरे

- तटीय क्षेत्रों का **वाणिज्यीकरण**
- **झींगा** (Shrimp) **फार्मों** का उद्भव
- **तापमान में उतार-चढ़ाव** (मैंग्रोव ठंडे तापमान में जीवित नहीं रह सकते)

संरक्षण उपाय:

वैश्विक

- बायोस्फीयर रिज़र्व और यूनेस्को ग्लोबल जियोपार्क में **मैंग्रोव को शामिल करना**
- **मैंग्रोव फॉर द फ्यूचर** पहल (IUCN तथा UNDP)
- **मैंग्रोव अलायंस** फॉर क्लाइमेट (UNFCCC COP27)

भारत

- **राष्ट्रीय मैंग्रोव समिति** (1976)
- मैंग्रोव इनिशिएटिव फॉर शोरलाइन हैबिटेट्स एंड टैंगेबल इनकम्स (MISHTI- मिष्टी) (केंद्रीय बजट 2023-24)

मैंग्रोव पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिये अंतर्राष्ट्रीय दिवस - 26 जुलाई (यूनेस्को)

दृष्टि The Vision | Drishti IAS

[और पढ़ें....]

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/mangroves-3